

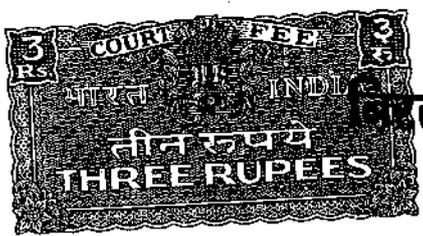
उत्पादित प्रतिलिपि आदेश दिनांक ५-३-१८
 न्यायालय अंतर्गत आयुक्त सम्बन्धित समिति द्वारा
 प्रकाशित सुनाने २॥ १५-१५ विनिर्देश

शुद्धीलाल पुत्र विष्णुवर निवासी
 ब्राह्म - डोडरी - तहसील - पोरमा
 जिला - सुरेना (म.प्र.) - - - - - प्राथमिक

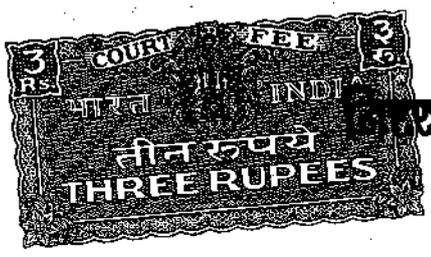
विनायक



१- नाथू राम पुत्र मिष्कीराम निवासी - ब्राह्म -
 हरिहर कापुरा, मोजा - सुरेना - तहसील
 सम्बन्धित जिला - सुरेना (म.प्र.)

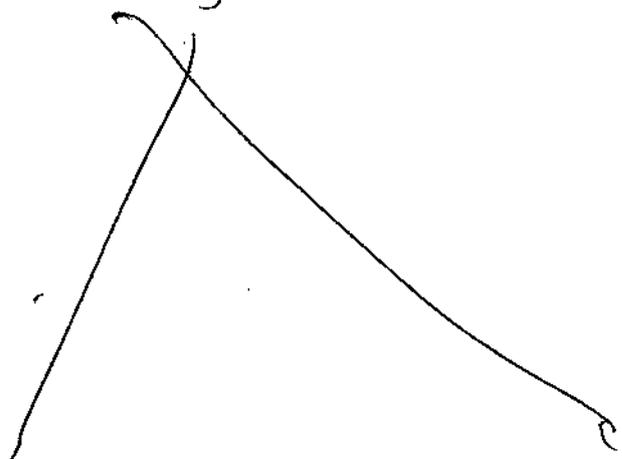


२- शिव प्रसाद पुत्र बुद्धावर लाल निवासी - ब्राह्म -
 डोडरी - तहसील - पोरमा जिला - सुरेना
 हाल निवासी शिक्षक प्राथमिक पाठशाला
 कीचोल थाना - नगरा - तहसील - पोरमा - जिला -
 सुरेना (म.प्र.)



३- राम सेवक पुत्र श्री चन्द्र निवासी - ब्राह्म -
 डोडरी - तहसील - पोरमा - जिला - सुरेना
 (म.प्र.) - - - - - प्राथमिक

3
 प्रधान प्रतिलिपिकार
 कार्यालय आयुक्त सम्बन्धित समिति न्यायालय
 गैर



6-4-16

- 1 -

श.प. 938-18/95

प्रकरण आदेश हेतु प्रस्तुत हुआ। अवलोकन किया गया। आवेदक के अभिभाषक के तर्कों पर विचार करने एवं उपलब्ध अभिलेख के अवलोकन से वस्तुस्थिति यह है कि आवेदक ने अपर आयुक्त, चम्बल संभाग, मुरैना के समक्ष निगरानी क्रमांक 147/1987-88 प्रस्तुत की थी जो अपीलांत एवं उनके अभिभाषक के सूचना उपरांत अनुपस्थिति रहने के कारण आदेश दिनांक 15-3-1993 को अदम पैरबी में निरस्त कर दी गई।

2/ अदम पैरबी आदेश दिनांक 15-3-1993 से प्रकरण खारिज होने पर प्रकरण पुर्नस्थापित करने हेतु अपीलांत ने अपर आयुक्त के समक्ष संहिता की धारा 35(3) के अंतर्गत अवधि विधान की धारा 5 के आवेदन के साथ पुर्नस्थापन आवेदन दिनांक 1-12-1996 को प्रस्तुत किया, जो अतिविलम्ब से प्रस्तुत होने के कारण एवं अदम पैरबी आदेश की जानकारी उन्हें समय पर होने

f
12

के आधार पर निरस्त किया गया है।

भू राजस्व संहिता, 1959 (म0प्र0)- धारा 35 -
अत्याधिक अवधि व्यतीत होने के बाद एक पक्षकार
को लाभ देते हुये द्वितीय पक्षकार को प्रोदभूत
अधिकारों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

विद्वान अपर आयुक्त ने इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर
लम्बे समय बाद प्रस्तुत धारा 35 (3) के आवेदन को
स्वीकार नहीं किया है जिसमें किसी प्रकार का दोष नहीं
है।

3/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर अपील ठोस
आधारों पर आधारित होना नहीं पाये जाने से अमान्य की
जाती है। फलतः अपर आयुक्त, चम्बल संभाग, मुरैना
द्वारा प्रकरण क्रमांक 21/94-95 विविध में पारित आदेश
दिनांक 4-3-98 उचित पाये जाने से यथावत् रखा जाता
है।

2/5


सदस्य